Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 15, Issue No. 9, October-2018, ISSN 2230-7540

फीजी एक परिचय

Gopal Mishra*

Research Scholar

सारांशः- *फीजी द्वीपसमूह पृथ्वी का स्वर्ग है। जो कि आधिकारिक रूप से फीजी समूह गणराज्य नाम से जाना जाता है। फीजी द्वीप मुख्य द्वीप विती लेबु के नाम से जाना जाता है और इसी नाम का उच्चारण इनके पड़ोसी द्वीप टोंगा के निवासी "फिसी" के रूप में करते थे जिसके कारण इसका नाम 'फीजी' पड़ा था। भूगर्भशास्त्रियों के अनुसार फीजी के मूल निवासियों का उदगम इण्डोनेशिया को माना जहां के मालेशियन लोगों और अन्य जगहों से आये पोलीनेशियन लोगों ने फीजी में बसावट की। और इन दोनों से एक नई मिश्रित सभ्यता का प्रदुभाव हुआ। यह लोग आदिवासी की तरह अपना जीवन यापन करते थे। इन्हें काईवीती कहा जाता था इन्हें खुली हवा और प्राकृतिक सुन्दरता से घिरे वातावरण में रहना उनकी परम्परा का एक हिस्सा है। धार्मिक, व सामाजिक समारोह में नृत्य करना, तथा निगोना और तावुका पीना पसंद करते थे यूरोपियन लोग 19वीं सदी के प्रथम दशक से फीजी में आने लगे थें फीजी की विशाल धारियां सुन्दर जलवायु हर प्रकार की फसले होने की क्षमता आदि ने गोरे लोगों में फीजी आने के लिये आकर्षित किया। जो वहां अपनी पूंजी लगाकर कमाई करना चाहते थे। 1874 में फीजी ब्रिटिश सरकार का एक उपनिवेश बन गया। इसलिये फीजियनों की भूमि और भारतीय के श्रम का सम्मिलित शोषण ब्रिटिश पूंजी के विस्तार के लिये किया गया।*

शब्द कुंजी - फीजीद्वीप, काईवीती, परम्परा, फीजीयन, ब्रिटिश उपनिवेश, भारतीय मजदूर, शर्तबंद कुली।

----------X----------

फीजी जो कि आधिकारिक रूप से फीजीद्वीप समहू गणराज्य (फीजीयाई: Matanitu Tu-Vaka-i-Koya Ko Viti) के नाम से जाना जाता है, यह न्यूजीलैण्ड के नॉर्थ आईलैण्ड के करीब 2000 किमी उत्तर-पूर्व में स्थित है। इसके समीपवर्ती पड़ोसी राष्ट्रों में पश्चिम की ओर वनुआतु, पूर्व में टोंग और उत्तर में तुवालु है। 17वीं और 18वीं शताब्दी के दौरान डच एवं अंग्रेजी खोजकर्ताओं ने फीजी की खोज की थी।1 1970 तक फीजी एक अंग्रेजी उपनिवेश था प्रचुर मात्रा में वन, खनिज एवं जलीय स्रोतों के कारण फीजी प्रशान्त महासागर के द्वीपों में सबसे उन्नत राष्ट्र है। वर्तमान में पर्यटन एवं चीनी का निर्यात इसके विदेशी मुद्रा के सबसे बड़े स्रोत हैं। यहाँ की मुद्रा फीजी डॉलर है।

फीजी के छोटे-बड़े कुल 332 द्वीप हैं जिनमें से 106 स्थायी रूप से बसे हुए हैं। जो कुल मिला कर 18,300 वर्ग किमी के क्षेत्रफल का निर्माण करते हैं।2 सन् 1911 की जनगणना के अनुसार फिजी की जनसंख्या 1,39,541 है इन द्वीपों में दो द्वीप सबसे बड़े हैं वीती लेवू और दूसरा वनुआ लेवू इनके अतिरिक्त कन्दावू और तवयूनी नामक टापू भी बड़े-बड़े है यहां की भूमि बहत उपजाऊ है समुद्र के किनारे नारियल के पेड़ों के साथ-साथ यहां रतालू शकरकन्द और नारंगी बहुत पायी जाती है।[3]

ऐतिहासिक दृष्टि से यह निश्चित रूपसे बता पाना कठिन है कि फीजी द्वीप समूह में जन जीवन का संचार कब और कैसे हुआ। भूगर्भशास्त्रियों का मानना है कि फीजीद्वीप समूह उतना प्राचीन नहीं जितना यूरोप व एशिया के अन्य देश, इतिहासकारों का मत है कि इण्डोनेशियो यहां के लोगों का मूल उदगम स्थान है। फीजीयन दंत कथाओं के अनुसार इण्डोनेशिया के मालेनेशियन लोग यहां बड़ी-बड़ी नावों में आये और यहां बस गये संभवत यही लोग यहां के मूल निवासी है। कुछ हजार वर्षों के पश्चात पोलीनेशियन लोगों का आगमन हुआ, थोड़े समय में ही पोलीनेशियन लोग अपने पूर्ववर्ती लोगों के साथ घुल-मिल गये और एक नई शंकर सृष्टि का प्रदुभाव हुआ यूरोपियन लोग यहां सर्वप्रथम जब आये तो उन लोगों को इन्हीं का सामना करना पड़ा।[4]

काईवीती लोगों में संयुक्त परिवार की प्रथा है। इनके परिवार बस्तियों में रहते है बस्तियों का एक मुखिया है जिसे 'तुरांगा नि कोरो' कहते है और कुछ छोटी-छोटी वस्तियों के बुलियों के इलाके तूई (राजा) के नीचे होते है। अठारहवीं सदी के अंत तक स्थिति यह थी कि फीजी वासी चाहे वे पोलीनेशियन मूल के हो या मालेनेशियन उनकी स्थिति बहुत कुछ आदिवासियों जेसी ही थी हां वे कुछ समूहों में अवश्य बंट गये थे। समूह

www.ignited.in

उनके मुखिया सरदारों या सामंतो के अधीन थे। इस प्रकार पूरा फीजी कई छोटे-बड़े सामंतो राज्यों मे विभक्त था। इनके सामंत आपस में लड़ करते थे।[5]

फीजीद्वीप का मुख्य द्वीप विती लेवु के नाम से जाना जाता है और इसी नाम का उच्चारण इनके पड़ोसी द्वीप टोंगा के निवासी "फिसी" के रूप में करते थे। जिसके कारण इसका नाम फीजी पड़ा है। यूरोपीय लोगों को फीजीवासियों के बारे में सर्वप्रथम कैप्टन कुक के महासागरीय अभियानों के दौरान उनके दल के सदस्य रहे लेखकों के लेखों के द्वारा पता चला। यह लेखक फीजीवासियों से पहले पहल टोंगा द्वीप पर मिले थे। इन लेखों में फीजी की मूल निवासियों को दुर्जेय योद्धा और क्रूर आदमखोंरो के रूप में वर्णित किया गया था, साथ ही उन्हें प्रशांत क्षेत्र में श्रेष्ठ वाहिकाओं (पोतों) के निर्माता लेकिन औसत नाविक के रूप में भी दर्शाया गया है। वे अपने घर को विती कहते थे, लेकिन टोंगाओं ने इसे फिसी कहा और कैप्टन कुक ने जो एक विदेशी थे इनका उच्चारण फीजी किया और अब इन द्वीपों के नाम इसी नाम से जाना जाता है।[6]

हॉलैण्ड निवासी एवल तस्मान 1743 में इन द्वीपों की खोज करने वाला पहल यूरोपियन मान जाता है। तसमान के वाद दूसरे यात्री फीजीद्वीप के आये उनका नाम कैप्टन जैम्स कुक था। कप्तान कुक के यात्रा विवरणों से पता चलता है कि वह 2 जून 1774 ई. को फीजी के लताओ द्वीप पर रूका और उसने उसका नाम टर्टल आइलैण्ड (कच्छप द्वीप) रखा था, क्योंकि उस द्वीप की भूमि बीच में कछुएं की पीठ की तरह उठी हुई थी। 'बाउण्टी' नामक जहाज का कप्तान विलियम ब्लाइ फीजी द्वीपसमूह से होकर गुजरा (1789 ई.)। ब्लाई, कुक की तीसरी समुद्र यात्रा में उसका साथी था, ब्लाई को यह मालुम था फीजी के मूल निवासी नर भक्षी है इस लिये उनके सम्पर्क से बचकर निकल गया केवल जहाज से उसने इन द्वीपों को देखा था। उसी कारण इन द्वीपों का नाम उक्त कप्तान के नाम पर 'ब्लाई द्वीप' पड़ गया था। तीन वर्ष बाद (1792), कप्तान ब्लाई 'प्रोबीडेंस' नामक जहाज लेकर पुनः इधर से गुजरा। कहते हैं कि 1792 ई. में 'पैण्डोरा' जहाज का कप्तान एडवर्ड 'वाउण्टी' जहाज के बागी नाविकों की तलाश में इधर आया था। उस यात्रा के दौरान फीजी के उत्तर में रोतूमा द्वीप उसने देखा था सौ वर्ष बाद (1882), रोतूमा ब्रिटिश शासन के अधीन हो गया।[7]

1808 में एक दुर्घटना हुई जब दो मस्तूल वाला एलीजा नामक अमरीकी जहाज इधर आया है 'नईराई' स्थान के पास मोसिया रीफ में मूंगे की चट्टानों से जा टकराया। अधिकांश नाविकों का तो पता भी नहीं चला कि वे कहा गये। फीजी के लोगों को उनमें से दो नाविक मिले। एक नाविक बाऊ और दूसरा बराता गांव में पहुंचा। बाऊ गांव में पहुंचने वाले नाविक का नाम चाल्स सेवेज थ। वह स्वीडन का निवासी था। आगे चलकर चाल्स सेवेज फीजी की इतिहास में नया दौर लाने का कारण बना।[8] उस नाविक ने अपने हथियारों के बल पर अपना प्रभाव बहुत बढ़ाया। उसने फीजी के लोगों को बारूद और हथियारों की शक्ति से प्रथम बार परिचित कराया। उसकी तोपो और बन्दूको के सामने फीजी के सामंतो के छक्के छूट गये। यहीं से बाऊ के सामंत राज्य का भाग्योदय हुआ।[9]

इस कबीले का प्रतापी राजा सेरू दाकम्बाऊ का इसाई धर्म अपनाने के चलते यूरोपियन व टोंगा के सहयोग से पश्चिमी फीजी का प्रमुख सामंत बन गया। लेकिन स्थिति इतनी सहज नहीं थी दाकम्बाऊ का अपने सामंत काल में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ा यूरोपियन लोग छोटी मोटी रकम देकर छोटे-छोटे सामंतों से जमीन खरीद लेते। इन्हीं में सबसे आगे था न्यूजीलैण्ड में स्थिति अमेरिकी कॉन्सिलर विलियम्स जिसने 80 डॉलर देकर नुकुलाऊ द्वीप में लौदाला पोइंट और बहुत सी जमीन खरीद ली, वहां 4 जुलाई 1849 को बड़ा जश्न मनाया गया जिसमें तोप के फट जाने से एक नीग्रो नौकर की बांह उड़ गयी बड़ा हंगाम मचा, लूट खसोट हुयी कॉन्सिलर ने दाकम्बाऊ से 1000 पोण्ड हरजाने की मांग की लेकिन दाकम्बाऊ उसे चुका नहीं सका।[10] समय बीतता गया रकम बड़कर 40,000 पोण्ड हो गयी। अमेरिकी कर्जे का बोझ दाकम्बाऊ के सिर पर भूत की तरह सवार था।[11] जिससे अमेरिकी आक्रमण के खतरे को देखते हुए अन्य सामन्तों से सलाह मशविरा करके 10 अक्टूवर 1874 को एक समर्पण दस्तावेज (डीड ऑफ़ सेशन) पर दाकम्बऊ व अन्य सामन्तों ने हस्ताक्षर कर दिए इस प्रकार फीजी ब्रिटिश साम्राज्य का एक उपनिवेश बन गया।[12]

फीजी में प्रवासी भारतीय आगमन

1850 के दशक में फीजी में जो लोग गए हुए थे, उन्होंने भारतीय मजदूरों के बारे में सुन रखा था और उन्हें प्राप्त करने की केशिश की। 1867 में हेनिग्स ने लैवूका में ब्रिटिश कौसिल से पूछा कि क्या ब्रिटिश सरकार कुछ भारतीय मजदूरों को उपलब्ध करा देगी, परन्तु उसने इन्कार कर दिया। 1870 में वहां का एक बागान मालिक नेथनियल चाल्स भारत आया और उसने भारत में मजदूरों की भरती करनी चाही, पर भारत सरकार ने उसे मना कर दिया। दो वर्ष बाद उसने दाकम्बाऊ सरकार से कहा कि वह भारत सरकार को एक सरकारी अनुरोध पत्र भेजे, परन्तु भारत सरकार ने और इंडिया ऑफिस ने वह प्रार्थना भी अस्वीकार कर दी।[13]

www.ignited.in

जिस समय फीजी 1874 में ब्रिटिश सरकार की अधीनता में आया उस समय सर आर्थर गॉर्डन उसके पहले राज्यपाल बनाये गये। उसने प्रशासन की बागडोर संभालते ही वहां की आर्थिक स्थितियों का अध्ययन किया उसने पाया कि यहां की धरती बहुत उपजाऊ है अगर यहां गन्ना कपास आदि की खेती की जाये तो उसके परिणाम निश्चय ही सकारात्मक होंगे फिजी के आदिवासी मेहनत करना पसन्द नहीं करते थें यह उन्हीं का प्रयास था कि उन्होंने वहां के स्थानीय लोगों को इस बात के लिये राजी किया कि वह भारतीय मजदूरों को यहां आने दें।[14]

आर्थर गॉर्डन जोकि 1834 सूरीनाम, 1838 मॉरीशस, 1845 त्रिनिदाद, 1873 सूरीनाम में गर्वनर रह चुके थे और उन्हें मालूम था। कि भारतीय मजदूरों के सहयोग से किस प्रकार इन देशों के चीनी उद्योगों ने उन्नति की हैं। उपनिवेश मंत्री लार्ड कार्नरवोन ने उनके इस अनुभव के कारण उन्हें चुना था। उन्हें इसलिए भी चुना गया कि वह प्रसिद्ध राजनेता लार्ड एबरडीन के सबसे छोटे लड़के थे। उन्होंने फीजी में आकर यह बताया कि किस प्रकार भारतीय मजदूरों की सहायता से ही फीजी कृषि और उद्योग की दिशा में उन्नति कर सकता है। इस सम्बंध में उन्होंने 9 सितम्बर 1875 को जो भाषण दिया, वह महत्त्वपूर्ण था यह भाषण फीजी के बागान मालिकों को सभा में दिया गया था। उन्होंने कहाः-

"इस उपनिवेश के लिए यह अत्यन्त आवश्यक है कि यहां पर मजदूर काफी संख्या में निरंतर उपलब्ध होते रहें। इन्हें हम कहां से प्राप्त करें और किस व्यवस्था के अन्तर्गत मजदूरों को हम निश्चित रूप से प्राप्त कर सकें, वे सबसे सस्ते हों और जिनके दुरूपयोग की सबसे कम संभावनाएं हों।[15]

फीजी में भारतीय शर्तबंद कुलियों के प्रवेश के वही कारण थे जो वैस्टइण्डीज, मॉरिशस, या दक्षिण अफ्रीका में थे। ये कारण थे- दूसरे प्रकार के मजदूर कम मिलते थे और उन पर खर्च अधिक पड़ता था। वस्तुतः जिस खर्च पर भारतीय मजदूर प्राप्त किये जाते थे उस खर्च पर कहीं से भी उतने परिश्रमी और योग्य मजदूर नहीं मिल सकते थे। दूसरे वे अपने घरों से इतनी दूर होते थे कि उनके लौटकर वापस जाने की कोई सम्भावना भी नहीं थी।[16]

फीजी में, स्थानीय निवासी दूसरों की खेती पर मजदूरी करना न तब पसन्द करते थे और न अब पसन्द करते है। इसीलिए प्रशान्त महासागर के अन्य द्वीपों- जैसे न्यूहैब्राइड्स, ताना, सोलोमन द्वीपसमूह और गिलबर्ड, किंग्समिल और टोकेयू द्वीप से पोलीनेशियन वंश के मजदूर लाये जाते थे, जो स्थानीय लोगों से अधिक परिश्रम कर कसते थे और जिनके बारे में यह विश्वास रहता था कि वे जल्दी भागें नहीं। वे काम की दृष्टि से भी ज्यादा उपयोगी थे। वे मुख्यतया कपास और गन्ने के छोटे-छोटे बगानों में काम करते थे उनकी संख्या गिरती जा रही थी। 1871-72 में ऐसे लोगों की संख्या 3,000 थी, जो अगस्त 1875 में 1560 रह गयी। इधर बागान मालिकों की हालत अमरीका में कपास के उत्पादन होने और फ्रांस तथा जर्मनी में लड़ाई से कपास के लिए फ्रांसीसी बाजार बन्द होने के कारण इतनी खस्ता हो गयी थी कि वे ब्याज पर रूपया उधार लेकर अपना जीवनयापन कर रहे थे। उनमें यह सामर्थ्य नहीं थी कि तीन हजार मजदूरों को वेतन दे सकें या उन्हें वापस भेजने का खर्चा कर सकें।[17]

वस्तुतः इस बात की पुष्टि कि बागान मालिकों की कैसी हालत थी, गॉर्डन ने 21 अगस्त 1875 के अपने गोपनीय पत्र में वर्णित की थी। यही कारण था कि जुलाई 1875 में जबकि वह सम्भवतः फीजी पहुंचे भी नहीं थे, उपनिवेशवादियों को 'फीजी टाईम्स' के द्वारा जो सन्दशे भेजा था और 4 सितम्बर 1875 को जो छपा, उसमें इस बात का संकेत किया था कि फीजी की समस्या का निदान भारतीय मजदूरों का उपयोग है।[18]

स्पष्ट है कि फीजियनों की भूमि और भारतीय के श्रम का सम्मिलित शोषण ब्रिटिश पूंजी के विस्तार के लिए किया गया। यही कारण था कि बावजूद इसके कि इंग्लैंड में उदार पंथी लोगों ने प्रारम्भ से ही शर्तबंदी प्रथा पर भेजे जाने वाले मजदूरों और उनके साथ होने वाले दुव्र्यवहार का खुलकर विरोध किया, ब्रिटेन आय की रक्षा के लिए इन सारे आन्दोलनों पर मौन रहकर कान में तेल डाले रही। जब ग्लैडस्टन जैसे उदारपंथी प्रधानमंत्राी के ब्रिटिश गयाना में दो-दो बागान हों और उनके लिए भरतीय मजदूर सुदूर ग्याना में भेजे जायें, तो यह अनुमान किया जा सकता है कि चाहे विग हो या टोरी, चाहे उदारपंथी हों या अनुदारपंथ, भारतीय मजदूरों की ब्रिटिश अर्थ-व्यवस्था में उपयोगिता के बारे में ब्रिटिश सरकार को कोई सन्देह नहीं रहा। इसीलिए ब्रिटिश सरकार के कानों में जब यह पड़ गया कि श्रताबंदी प्रथा के अन्दर मजदूर जबरदस्ती पकड़कर या फुसलाकर लाये जाते है और उनकी स्थिति गुलामों से किसी प्रकार बेहतर नहीं है, तब गुलामी प्रथा के समाप्त होने के बाद भी यह प्रथा प्रारम्भ ही नहीं, कायम भी रखी गयी।[19]

फीजी की सामाजिक व धार्मिक स्थिति

करीब डेढ़ सौ साल पहले काईवीती नितांत आदिवासी जैसी अवस्था में जंगलों में रहा करते थे आदमियों को मारकर

www.ignited.in

खाना, कच्च मांस खा लेना, पेड़ के छिलके व पत्तियाँ पहनना, कंद मूल खाना और नारियल के पानी से प्यास बुझाना यही इन सबका जीवन था। सामंत के देहांत के बाद उसकी जीवित पत्नी को भी उसके साथ दफना दिया जाता था, सामाजिक व धार्मिक समारोह में लोगों की बलि दी जाती थी उस जमाने में काईवीती अनेक देवी देवताओं के उपासक थे उनके देवताओं में टापू का देवता, इलाके का देवता, बस्ती का देवता, नाग देवता इत्यादि प्रमुख थे लेकिन इन सभी में नागदेवता ही सर्वाधिक लोकप्रिय थे जिसकी पूजा आज भी इसाई धर्म अपनाने पर होती है। इन सबसके बावजूद वे काफी सरल, उदार और मेहमान नवाज है।[20]

निगोना फिजी का राष्ट्रीय पेय है। अतिथि को खास रस्मों रिवाज के साथ निगोना भेट किया जाता है। 'निगोना' और 'तावुआ' (एक तरह का पेय पदार्थ) को भेंट करने की रस्म को काईवीती में 'सेवू सेवू' कहा जाता है नाच गाने से मनोरंजन करना आज भी इस समाज की प्रिय परम्परा है। नाच को काईवीती 'मेके' कहते हैं सेयासेया, 'वाकामलोलो' आदि फिजी नृत्य भाव विभोर का देने वाले होते है। लोकगीत काईवीती जीवन का अनिवार्य अंग है। इनके बहुत से गीतों में प्राचीन काल के जीवन की झलक है। 'ईसालेई' उनका बहुत मनोहर गीत है जो परदेशियों के प्यार और आदर में गाया जाता है। आधुनिक सभ्यता अंग्रेजी एवं भारतीय सम्पर्क व सान्धिय में रहकर बहुत कुछ परिवर्तन आ गये ईसाई धर्म और शिक्षा के कारण इनका रहन-सहन और जीने का तरीका बहुत कुछ बदल चुका है लेकिन काईवीती अत्यधिक परम्परा प्रिय है इसलिये उनकी परम्पराएं आजा भी ताजा और जीवित है।[21]

यद्यपि फीजी में ब्रिटेन की रानी विक्टोरिया का राज 1874 में स्थापित हुआ परन्तु उनका राजदूत 1830 में ही फीजी में आ गया थ। उसे ब्रिटिश कौसल कहते थे। उसी के साथ-साथ और उससे पहले ईसाई पादरी भी फीजी में आ चुके थे। वेसे तो एकाध कैथोलिक पादरी भी आया था मुख्यतः जो पादरी आये, वे ब्रिटेन के थे। पादरियों से पहले टोंगा से, जहां के राजा ने ईसाई धर्म स्वीकार कर लिया था, जो नाविक फीजी जाते और वहां पर सामान खरीदते वे ईर्सा धर्म की चर्चा करते थे। सबसे पहले ब्रिटिश पादरी जॉन विलियम्स ने जो लन्दन मिशनरी सोसाइटी के सदस्य थे, दो ताहिती अध्यापकों की सहायता से फीजी में ईसाई धर्म का प्रचार करना चाहा। सन् 1830 में वह इस यात्रा पर चले परन्तु जब वह टोंगा पहुंचे तो फीजी के समाचार सुनकर उन्होंने मत बदल दिया, पर ताहिती से जो दो अध्यापक आये थे वे एक फीजी सरदार के साथ लकेवा आये। पर जब वहां के लोग ईसाई नहीं हुए तब वे उनियाता द्वीप में चले गये जहां उन्होंने एक गिरजाघर बनाया और कुछ लोगों को ईसाई धर्म में परिवर्तित किया।[22]

सन् 1834 में टोंगा में एक ब्रिटिश पादरी रेवरैंड विलियम क्रास ने दूसरे पादरी डेविडी करगिल की सहायता से फीजी में धर्म प्रचार के लिए तैयारी की, फीजी भाषा सीखी और फीजी भाषा में पढ़ना-लिखना सिखाने के लिए पहली किताब भी छाप दी। उन्होंने एक धर्म पुस्तक भी फीजी में अनुवाद करा दी और छपने के लिए प्रेस में दे दी। सन् 1835 में इस समूह ने जिसमें उनकी पत्नियां भी थी और अन्य परिवार भी था कुछ टोंगा निवासियों की मदद से लकेवा में प्रवेश किया। टोंगा नरेश जार्ज ने, जो ईसाई हो चुके थे, लकेवा के सरदार तुईन आयु को कुछ उपहार भेजे और उनसे अनुरोध किया कि वे पादरियों को संरक्षण प्रदान करें। बाऊ का राजा सेरू दाकम्बाऊ था जो कि पिछले 11 वर्षो से रेवा के साथ लगातार युद्ध होने के कारण उसकी स्थिति नाजुक हो गई थी टोंगा के राजा ने उससे ईसाई धर्म ग्रहण कर संरक्षण देने का वादा किया ऐसा उसने ईसाई मिशंनरियो के कहने पर किया था इस प्रकार फीजी में ईसाई धर्म का प्रवेश हुआ।[23]

फीजी की आर्थिक व राजनीतिक स्थिति

गोरे लोग फीजी में काफी वर्षों पहले पहुंच चुके थे। फीजी की विशाल घाटियां, सुन्दर जलवायु और हर प्रकार की फसलें होने की क्षमता न पड़ोसी आस्ट्रेलिया और न्यूजीलैंड ही नहीं, सुदूर इंग्लैंड के भी ऐसे लोगों का आकर्षित किया जो वहां पर अपनी पूंजी लगाकर कमाई करना चाहते थे। यूरोपियन लोग 19वीं शती के प्रथम दशक से फीजी में आने लगे थे। कुछ लोग ऐसे नाविक थे जिनके जहाज ध्वस्त हो गये थे, कुछ ऐसे नाविक और सैनिक थे जो नौसेना या सेना की नौकरी छोड़कर आये थे। वे इन द्वीपों में अपने लिए भविश्य की तलाश करते थे। इनको मजाक में, 'बीचकोम्बर' यानी समुद्र तट का झाड़ू लगाने वाला कहा गया। यह सही है कि समुद्र के किनारे के बीचों (तटों) पर ही यह उतरते थे, और पहले-पहल उसी के आसपास रहते थे, क्योंकि फीजी में समुद्र तट से आने वाले नीली आंखों वाले व्यक्तियों के प्रति बड़ा सन्देह था। अकेला दुकेला पाकर उन्हें मारकर खा लिया जाता था।[24]

सही बात यह थी कि आरम्भ से यहां के निवासियों को विदेशियों से शंका थी और उनसे बचने की कोशिश करते थे। कुछ विदेशियों ने एक नया धन्धा अपनाया। वे यूरोप में तैयार बन्दूरकों और पिस्तोलों को यहां के राजाओं को या लड़ने वाले कबीलों को बेचने लगे और उनकी एवज में या तो उन्होंने यहां की बहुमूल्य चन्दन की लकड़ी प्राप्त कर उसका निर्यात किया, या किसी सरदार को खुश कर जी भर कर भोग विलास

किया। फीजी में चन्दन की लकड़ी 1850 के दशक तक समाप्त हो गयी थी। इसके स्थान पर उन यूरोपियनों ने, जो आस्ट्रेलिया की सोने की खदानों में लाभ नहीं कमा सके या जो न्यूजीलैंड के माउरी युद्धों से ऊब चुके थे, यहां आकर कपास की खेती की या कपास का व्यापार करने लगे।[25]

फीजी ब्रिटिश सरकार का उपनिवेश बन गया अंग्रेज सरकार की ओर से वहां गर्वनर नियत होकर जाता था। गवर्नर की सहायता के लिये व्यवस्थापिका और कार्यकारिणी सभाये है इन सभाओं का सभापति गवर्नर होता था। व्यवस्थापक सभा में गवर्नर के चुने हुये 10 सरकारी अफसर सदस्य होते थे। फिजीयन लोगों के सरदारों की सभा अपनी ओर से दो सदस्य चुनकर भेजती थी और छः सदस्य सर्वसाधारण चुने जाते थे। गवर्नर कार्यकारिणी सभा का काम चीफ जस्टिस, अटार्नी जनरल, नेटिव कमिश्नर इमीग्रेशन विभाग के एजेन्ट जनरल और रिसीवर जनरल की सहायता से करता था। बाहर से आये हुये माल पर जो कर लगाया जाता वही अधिकतर आमदनी का जरिया था। इसन् 1911 में कुल आमदनी 2,48,304 पौड 14 शिलिंग हुयी इसमें से 1,46,628 पौण्ड आमदनी उस महसूल से हुयी जो बाहर से आयी वस्तुओं लगाया गया था। सन् 1911 ई. में बिल्डिंग टैक्स आरडीनेन्स पास होने के बाद सभी घरों पर कर लगने लगा फीजी के आदिम निवासियों के प्रत्येक बालिग पुरुष को दस शिलिंग से लेकर 1 पौण्ड तक प्रतिवर्ष कर देना पड़ता था। फीजी की जमीन पर वहां के आदिम निवासियों का अधिकार था। यह जमीन पट्टे पर उठायी जाती थी। सरकार पट्टे के रूपयों को इकट्ठा करके फिजीयन जमींदारों में बांट देती थी।[26]

1874 में ब्रिटेन का अधिकार होने के बाद कॉलोनियल शुगर रिकाइनिंग नामक आस्ट्रेलियन कम्पनी की स्थापना हुयी बड़े पैमाने पर गन्ने की खेती होने लगी। जिसमें भारतीय श्रमिकों को काम में लगाया गया और 20 मार्च 1916 को गिरमिट प्रथा का अन्त हो गया।[27] विधान परिषद में फीजीयन लोगों का उसकी परम्परिक व्यवस्था के आधार पर 1963 तक प्रतिनिधित्व मिलता रहा। और परिषद में एक भारतीय सदस्य नामजद किया जाता रहा लेकिन उनपकी यह संख्या प्रथम बार 1929 में बढ़ी। समर्पण पत्र पर हस्ताक्षर होने के ठीक 96वें वर्ष बाद 10 अक्टूबर 1970 को ब्रिटेन की महारानी ने फीजी को स्वतंत्र कर दिया। और 'रातूकामी सेसे मारा' फीजी के प्रथम प्रधानमंत्री बने जो 'एलांयस पार्टी' के नेता थे विरोधी दल का नाम 'फेडरेशन पार्टी' था। जिसका निर्माण ए.डी पटेल, एस.एम कोया व जेम्स माधवन ने किया। नई सरकार ने सेरू दाकम्वाऊ के प्रपौत्र रातूसारू दाकम्बाओं को मंत्री पद दिया।[28]

आजादी के बाद से अब तक चार तख्ता पलट हो चुके है दो 1987 में एक 2000 और एक 2006 के अंत में इसी बीच 1999 में फीजी लेवर पार्टी से भारतीय मूल के महेन्द्र चैधरी प्रधानमंत्री बने।[29]

पिछले कई प्रयासों के याद (बार-बार तख्ता पलट और अप्रभावी शासन) के बाद मार्च 2013 में फीजी की जनता के लिये एक संवैधानिक मसौदा तैयार किया गया। यह नया संविधान एक समान मूल्य के वोट को सुनिश्चित करता और लोगों के साथ राजनैतिक रूप से किसी प्रकार का भेदभाव नहीं करता। फीजी का संविधान यहां का सर्वोच्च कानून है जो यहां के बहु जातीय जनता के प्रतिनिधियों द्वारा सोच विचार कर तैयार किया गया है इस संविधान के अन्तर्गत सबको प्रत्यक्षतः समानता और पूर्ण स्वतंत्राता प्राप्त है।[30]

आज फीजी प्रभुतासम्पन्न लोकतंत्रात्मक राज्य है धर्म, जाति, सम्प्रदाय किसी प्रकार का भेदभाव नहीं बरता जाता फीजी के सौ आवाद द्वीपो में दो द्वीप वीतीलेबू और बनुआलेबू ही सबसे बड़े है। फीजी की राजधानी सूवा वीतीलेवू द्वीप पर स्थिति है और सौ सालों के प्रयत्नों से आज सूवा विकसित रूप में है सूवा शिक्षा का केन्द्र भी है। फीजी में अनेक धार्मिक व सामाजिक संस्थायें अपने-अपने स्कूल चलाती है, फीजी की तमाम संस्कृतियों के तीन प्रमुख है- फीजीयन (काईवीती) भारतीय, और यूरोपीय। काईवीती अत्यधिक परंपराप्रिय है इसलिये उनकी पुरातन परमम्पराएं आज भी ताजा और सजीव है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. द फिजी आइलैण्ड: ए जियोग्राफिकल हैण्ड बुक, लेखक- डेरिक, आर.ए. सूवा, फीजी (1951) पृ. सं. 2
2. इण्डियन फिजीयन म्यूजिक एण्ड आइडेन्टिटी डिस्कोर्स इन फिजी एण्ड इट्स डाइस्पोरा लेखक- मिलर केविन क्रिस्टोफर प्रकाशन- यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलीफोर्निया, (2008), पृ. सं. 2
3. फिजीद्वीप में मेरे 21 वर्ष, लेखक- सनाढ्य तोताराम, प्रकाशन- रे माधव पब्लिकेशन, गाजियाबाद, (2009), पृ. सं. 39

www.ignited.in

4. आस्ट्रेलिया, न्यूजलैण्ड एण्ड दी साउथ वेस्ट पैसिफिक, लेखक- रॉविन्सन के डब्लू, लन्दन, (1960), पृ. सं. 21

5. फीजी में श्रीराम, और रामकाव्य, लेखक- शर्मा विवेकानन्द प्रकाशन, प्रभात, नई दिल्ली, (2004), पृ. सं. 145

6. फीजी दिग्दर्शन लेखक- शर्मा. पण्डित रामचन्द्र, श्रीरामचन्द्र पुस्तकालय, बिजनौर, (1994), पृ. सं. 10

7. द फिजी ऑफ़ टूडे, लेखक- बर्टन जे डब्लू, प्रकाशन- चाल्स. एच. कैली, लन्दन, 1910, पृ. सं. 22

8. कॉलोनियल रिपोर्ट, 1923 (भा. रा. अ.) पृ. सं. 5

9. द फिजी आइलैण्ड: ए जियोग्राफिकल हैण्ड बुक, लेखक- डेरिक. आर.ए. सूवा, फीजी (1951), पृ. सं. 132

10. फीजी में श्रीराम और रामकाव्य, लेखक- शर्मा विवेकानन्द, प्रकाशन- प्रभात, नई दिल्ली, (2004), पृ. सं. 135

11. अप्रवासी भारतीयों का नस्लीय रूपांतरण, लेखक- डॉ. शालिनी प्रकाशन- प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली, (2014), पृ. सं. 19

12. फीजी का हिन्दी काव्य साहित्य, लेखक- कंवल जोगिन्द्र सिंह, प्रकाशन- भारतीय संस्कृति संबंध परिषद, आजादभवन, नई दिल्ली, (2004), पृ. सं. 2

13. फीजी में प्रवासी भारतीय, लेखक- चतुर्वेदी जगदीश प्रसाद, प्रकाशन- भारतीय संस्कृति संबंध परिषद, आजाद भवन, नई दिल्ली, (1985), पृ. सं. 67

14. फिजी एण्ड द फ्रेन्चाइजी ए हिस्ट्री आॅफ पाॅल्टिकल रिप्रजेन्टेसन, लेखक- अहमद अली, प्रकाशन- यूनिवर्सिटी साउथ पैसिफिक, (1991), पृ. सं. 1

15. ए हिस्ट्री ऑफ़ इण्डियन इमीग्रेसन एण्ड सेटलमेण्ट इन फिजी, लेखक- गिल्लन के. एल. प्रकाशन, आस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी, (1958), पृ. सं. 25, 26

16. चलो जहाजी, लेखक- लाल ब्रिज वी, प्रकाशन- डिविजन ऑफ़ पेसिफिक एण्ड एशियन स्टडीज, आस्ट्रेलिया, (2000), पृ. 141

17. फीजी दिग्दर्शन लेखक- शर्मा. पण्डित रामचन्द्र श्रीरामचन्द्र पुस्तकालय, बिजनौर, (1994), पृ. सं. 72

18. द फिजी ऑफ़ टूडे, लेखक- बर्टन जे डब्लू, प्रकाशन- चाल्स. एच. कैली, लन्दन, (1910), पृ. सं. 140

19. फीजी में प्रवासी भारतीय, लेखक- चतुर्वेदी जगदीश प्रसाद, प्रकाशन- भारतीय संस्कृति संबंध परिषद, आजाद भवन, नई दिल्ली, (1985), पृ. सं. 75

20. सम डिपेन्डेन्ट पीपुल्स आफ डी साउथ पैसिफिक, लेखक- मैण्डर, लिण्डन ए, न्यूयार्क, पृ. 384

21. फीजी में श्रीराम, और रामकाव्य, लेखक- शर्मा विवेकानन्द प्रकाशन, प्रभात, नई दिल्ली, (2004), पृ. सं. 146-148

22. फिजी ए प्रिकोरिएस कोलेशन, लेखक- सिह शुभा, नई दिल्ली, 2001, पृ. 62-63

23. फीजी में श्रीराम, और रामकाव्य, लेखक- शर्मा विवेकानन्द प्रकाशन, प्रभस, नई दिल्ली, 2004, पृ. सं. 134

24. फीजी में प्रवासी भारतीय, लेखक- चतुर्वेदी जगदीश प्रसाद, प्रकाशन- भारतीय संस्कृति संबंध परिषद, आजाद भवन, नई दिल्ली, (1985), पृ. सं. 63

25. द फिजी आइलैण्ड: ए जियोग्राफिकल हैण्ड बुक, लेखक- डेरिक, आर.ए. सूवा, फीजी (1951) पृ. सं. 164

26. फीजीद्वीप में मेरे 21 वर्ष, लेखक- सनाढ्य तोताराम, प्रकाशन- रे माधव पब्लिकेशन, गाजियाबाद, (2009), पृ. सं. 87

27. ए हिस्ट्री ऑफ़ इण्डियन इमीग्रेसन एण्ड सेटलमेण्ट इन फिजी, लेखक- गिल्लन के. एल. प्रकाशन, आस्ट्रेलियन नेशनल यूनिवर्सिटी, (1958), पृ. सं. 101

www.ignited.in

28. फीजी में श्रीराम, और रामकाव्य, लेखक- शर्मा विवेकानन्द प्रकाशन, प्रभात, नई दिल्ली, (2004), पृ. सं. 136

29. टीयर्स इन पैराडाइस, लेखक- राजेन्द्र प्रसाद, प्रकाशन- ग्लेड पब्लिशर, न्यूज़ीलैण्ड, (2004), पृ. सं. 273

30. एच. टी. टी. पी., विकीपीडिया, कॉन्स्टीट्यूशननेट. हिस्ट्र ऑफ़ फिजी डॉट ओ. आर. जी

Corresponding Author

Gopal Mishra*

Research Scholar

gopalmishraaug@gmail.com